फ़ोटो

अज़रा तबस्सुम

वो क्या है जिसका हम हमेशा ही एक पहलू देख सकते हैं? वो फ़ोटो है। हम चाहकर भी उसका दूसरा पहलू नहीं देख सकते।

फ़ोटो हम अकसर देखते हैं, पर यह बात मेरे दिमाग़ में तब आई जब हम अपने भाई के लिए लड़की देखने गये थे। वहाँ से हम अपने भाई के लिए लड़की का फ़ोटो लाए और भाई को दिखाई। मेरे भाई को लड़कियो के बाल लंबे अच्छे लगते हैं। उस लड़की का फ़ोटो सीधा खिंचा हुआ था। उसके पतले होंठ, आँखें फैली हुई, मीडियम क़द, जिस्म मोटा, रंग साफ़ था। वो दिखने में बहुत ख़ूबसूरत थी। भाई ने उसकी फ़ोटो को हाथ में लेते हुए पूछा, "यासमीन के बाल कितने लंबे हैं?" मेरी छोटी बहन बोली, "भाई, बाल बहुत लंबे हैं। चुटिया भी मोटी है"। उन्होंने फ़ोटो उलटते हुए कहा, "इसमें तो दिखाई दे नहीं रहे"। यह बात उन्होंने मज़ाक में कही थी। पर मेरे दिमाग़ में यह बात सोचने के लिए चली गई।

लोग जब कोई फ़ोटो देखते हैं, जिसमें लड़का–लड़की एक साथ हों, तो अकसर सोचते हैं, "ये दोनों रोमांस कर रहे हैं"। मतलब कि उस में हम पिछला, या काल्पनिक समय चला देते हैं। दिखने वाली चीज़ को हम पीछे से देख लेते हैं। पर फ़ोटो को नहीं। हमारा पूरा वजूद इतने–से काग़ज़ में सिमट जाता है।

कहते हैं फ़ोटो में हमारा वजूद, हमारी यादें, हमारा समय, हमारे एक्सप्रेशन क़ैद हो जाते हैं। सब कुछ क़ैद होने के बाद भी उस पिंजरे में कोई घुटन नहीं। पहले के लोगों का कहना है ज़्यादा फ़ोटो खिंचवाने से उम्र कम हो जाती है। क्या ये सच है? ये मैं अभी तक नहीं जानती। किसी से पूछती हूँ तो कहते हैं, "बड़े–बुज़ुर्गों का कहना है"। कुछ इंसान ऐसे होते हैं जिनका फ़ोटो देखो तो लगता है अभी इसमें से निकल कर बोल पड़ेंगे। आईना और फ़ोटो एक ही हैं, तो ये अलग क्यों माने जाते हैं? आईने और फ़ोटो में क्या फ़र्क़ है?

सीवर लाइन

लख्मी चन्द कोहली

ये कहानी है एक ऐसे इंसान की जो हमेशा ही शराब पीकर अपना काम करता था। वो काफ़ी पढ़ा–लिखा होने के बावजूद भी सीवर में घुस, सीवर की सफ़ाई करता था।

हमारे यहाँ की सीवर लाइन हमेशा ही हमारी एक परेशानी बनी है, कभी भी बंद हो जाती है और हमेशा ही भरी रहती है। और सीवर के ढक्कन भी नहीं हैं, जिसकी वजह से पूरी गली में बदबू रहती है। हमारे यहाँ सीवर के ढक्कन इसलिए नहीं हैं क्योंकि हमारे यहाँ के जो शराबी हैं, वे हम पर कुछ ज़्यादा ही मेहरबान हैं। छोटे ढक्कन तो क्या, बड़े ढक्कन भी नहीं छोड़ते। सीवर बंद होने की वजह से हमारे यहाँ का पानी भी गंदा आता है। इतना गंदा कि हम उसे पीने में तो क्या, हम उसे किसी भी काम में इस्तेमाल नहीं कर सकते। सीवर बंद होने का भी एक कारण है। वो ये है कि हमारी गली की नालियाँ लोगों ने बंद कर रखीं हैं। सारा कूड़ा हमारी सीवर लाइन में जाता है, जिसकी वजह से सीवर लाइन बंद हो जाती है।

एक बार की बात है। हमारी सीवर लाइन बिलकुल बंद हो गई थी। जिसके कारण हमारे यहाँ का पानी भी इतना गंदा आ रहा था कि पानी को पीना तो दूर, उसकी महक भी सूँघना नामुमकिन था। सीवर बंद होने पर सभी गली–वालों ने मिलकर एक शिकायत लिखी और सीवर साफ़ करने वालों को दी। वहाँ जब हम लोग गए तो हम ने देखा कि वहाँ पर एक ही आदमी था जो हमारी शिकायत दर्ज कर रहा था। वो दिखने में बिलकुल पतला था। ऐसा लगा वो आदमी अच्छा पढ़ा–लिखा था, क्योंकि वो इंगलिश साफ़ लिख रहा था। हम अपनी शिकायत वहाँ पर दर्ज करवा कर घर लौट आए।

फिर दूसरे दिन वो अपना सारा सामान लेकर हमारे सीवर को साफ़ करने आए। उन का सामान था – तीन लम्बी, पतली लकड़ियाँ (कम से कम नौ फुट की), और दो सरीये (आगे से थोड़े मुड़े हुए)। वो पाँच आदमी थे। उनमें वो आदमी भी था जिस ने

हमारी शिकायत लिखी थी। आज वो दिखने में बहुत ही गंदा लग रहा था। उस ने गंदे, बदबूदार कपड़े पहने थे। और आज उस ने कुछ ज़्यादा ही लगा रखी थी। उसे इस हालत में देखकर मैं हैरान हो गया। मैंने सोचा, इतना पढ़ा–लिखा आदमी आज इतना गंदा बनकर क्यों आया है? मैं उसे हैरानी–भरी आँखों से देखता रहा और यही सोचता रहा। उस के साथ आए चार आदमी सीवर खोल–खोल कर देख रहे थे। और वो चुप होकर एक जगह खड़ा हुआ था। वो चारों आदमी एक दूसरे से कह रहे थे, "ये सारे सीवर भरे हुए हैं"। फिर उन्होंने हमारी गली के सबसे आख़री वाले सीवर को खोला और –

अशोकी से कहा (अशोकी उसी आदमी का नाम है) अशोकी, तुम सीवर में घुसो और देखो कि कहाँ पर कूड़ा अटका हुआ है।

अशोकी ने कहा अच्छा जी, मैं अभी देखता हूँ।

उसको सीवर में घुसते देख मुझे बड़ी हैरानी हुई। मैं अपने मन ही मन सोचता रहा कि ये आदमी कोई साहब नहीं, बल्कि सीवर साफ़ करने वाला एक छोटा–सा कर्मचारी है। उसके साथ वो चार आदमी उससे शायद कम पढ़े–लिखे थे। क्योंकि अशोकी ही वहाँ पर आई सारी शिकायतों को दर्ज करता था।

अशोकी ने सीवर में घुस कर सीवर को अच्छी तरह साफ़ किया। उसमें से कुछ कपड़े और कुछ और कूड़ा निकला। अब हमारे सीवर बिलकुल साफ़ हो गये थे। सीवर साफ़ होने के बाद सभी गली–वालों ने मिलकर ढाई सौ रुपए इकट्ठा किए और सीवर साफ़ करने वालों को दिए। फिर वो अपने ऑफ़िस लौट गए। उनके जाने के बाद मैंने सोचा कि उस आदमी से बात करनी चाहिए और मैं उस से बात करने दूसरे दिन उसके ऑफ़िस पहुँचा। आज वो साफ़ कपड़ों में था। मगर आज भी उस ने कुछ ज़्यादा ही लगा रखी थी। मैंने जब उस से बात करनी चाही तो –

उसने कहा (हाथ जोड़कर) ओ भाई, तू कौन है? और मेरे पीछे क्यों पड़ा है? मेरा पीछा छोड़ यार। मुझे नहीं देने तेरे सवालों के जवाब।

इतना कहकर उस ने मुझे एक भिखारी समझकर बाहर जाने को कहा, और मैं चुपचाप

बाहर आ गया। मैं उस से क्या बात करता? उस ने आज कुछ ज़्यादा ही लगा रखी थी। जैसे ही मैं बाहर आने लगा तो वहीं पर खड़ा एक आदमी मुझे देख रहा था। उस ने मुझे रोका और कहा –

आदमी ओ बेटा, इधर आ!

(तो मैं उसके पास गया और मैंने नमस्ते किया।)

उन्होंने पूछा बेटा, तुम कौन हो? और इससे क्या बात करना चाहते हो?

मैंने कहा सर, कुछ नहीं, मैं बस यही जानना चाहता हूँ कि ये आदमी ऐसा क्यों है?

तो वो बोले बेटा, मैं तुझे बताता हूँ ये ऐसा क्यों है।

मैंने पूछा सर, आप का नाम?

(वो आदमी दिखने में मोटा और साँवला था। उस ने मुझ से कुछ नहीं पूछा। ये भी नहीं कि तुम कहाँ से आए हो और इसके बारे में क्यों जानना चाहते हो।)

उन्होंने बताया मेरा नाम हरी सिंह है।

मैंने पूछा सर, ये आदमी इतनी शराब क्यों पीता है?

तो उन्होंने कहा भाई, मैं क्या बताऊँ? इससे मैंने कितनी बार कहा है कि इतनी शराब मत पीया कर। लेकिन ये मानता ही नहीं है। उल्टा मुझे ही दो गाली देकर भगा देता है।

मैंने पूछा सर, इसके घर में इसे कोई मना नहीं करता?

उन्होंने कहा बेटा, इसके घर में कोई नहीं है। इसके घर वाले सारे गाँव में रहते हैं। इसलिए ये यहाँ रोज़ पीकर रहता है। इसके इतना ज़्यादा पीने के चक्कर में एक दिन इसकी नौकरी जाएगी।

"सर मैं आपके बारे में कुछ पूछ सकता हूँ?"

उन्होंने कहा हाँ–हाँ, पूछो। लेकिन क्या पूछोगे?

मैंने कहा कुछ ज़्यादा नहीं सर। बस कुछ आपके काम के बारे में।

उस ने कहा ठीक है, पूछो।

मैंने पूछा सर, आपको यहाँ काम करते–करते कितना टाइम हो गया?

उन्होंने कहा मुझे लगभग दस–बारह साल हो गए हैं।

मैंने पूछा सर, आपको यहाँ काम करना कैसा लगता है?

उन्होंने कहा बेटा, काम में कोई बुराई नहीं होती। एक मज़दूर को अपना काम करना अच्छा लगता है।

(फिर मैंने उन्हें धन्यवाद किया और कुछ उसके बारे में पूछने की कोशिश की।)

मैंने कहा सर, आपके अफ़सर इसको कुछ नहीं कहते?

उन्होंने कहा क्या कहेंगे? ये कुछ समझे तो। हाँ, कभी–कभी कुछ कहते तो हैं। मगर इस पर असर नहीं पड़ता। कितनी बार तो इसे नौकरी से निकालने की धमकी भी दी है, मगर इसे उनकी बातों से कुछ लेना–देना ही नहीं है।

मैंने पूछा सर, इससे कभी बात नहीं हो सकती?

उन्होंने कहा नहीं। इससे तो बात करना बेकार है। ख़ामख़ाँ ये दो–चार गाली तुम्हें सुना देगा। वो तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है।

मैंने कहा ठीक है सर, कोई बात नहीं। इससे तो नहीं, आप से बात करके अच्छा लगा। धन्यवाद।

फिर उसने जाते–जाते पूछा सुनो बेटा, एक बात बताओ। तुम कहाँ से आए हो? और इतना कुछ क्यों पूछ रहे हो?

तो मैंने कहा सर, मैं अंकुर संस्था से आया हूँ और कुछ लोगों से बातें करना चाहता हूँ। उनके बारे में और उनके काम के बारे में कुछ जानना चाहता हूँ।

इतना कह कर मैं वहाँ से चल दिया, और यही सोचता रहा कि जिससे बात करनी थी, उससे तो बात हो न सकी। मगर कोई बात नहीं, फिर भी कुछ हद तक तो काम हुआ।

मैं अशोकी

लख्मी चन्द कोहली

ये कहानी है एक ऐसे इंसान की जिसका नाम अशोकी है। वो दिखने में पतला और साँवला है। कभी साफ़, तो कभी गंदा। वो सीवर में घुसकर उसकी सफ़ाई करता है। उसकी उम्र लगभग तीस–पैंतीस साल होगी।

मैं अशोकी। बात शनिवार की है। हम शिकायत पर, कि गली के सीवर लाइन बंद पड़ी थी, वहाँ गए। मगर हम तो मेन सीवर लाइन को साफ़ करने आए हुए थे। उस गली में घुसते ही मैं चुपचाप एक जगह खड़ा हो गया। मुझे सीवर में घुसना था। इसलिए मैं गंदे कपड़े पहन कर, और थोड़ा नशा करके आया हुआ था। उस गली के लोग अपने घरों के बाहर आ कर हमें बता रहे थे, "तीसरा वाला सीवर भरा हुआ है। वह यूँ, कि वहाँ पर अभी–अभी नया घर बना है और जब लेन्टर का मसाला बन रहा था, तो वो सीवर पर ही आ रहा था। शायद वो मसाला उस के अंदर चला गया हो"।

मेरे साथ आए मेरे साथी सीवर के ढक्कन खोल कर देख रहे थे और मैं चुपचाप वहीं पर खड़ा हुआ था। लोग मुझे ऐसे देख रहे थे जैसे मैं कोई पागल हूँ। और कुछ तो मुझ से घिन कर रहे थे। वो यूँ, की जब उनके बच्चे मेरी तरफ़ आते तो वो अपने बच्चों को डाँट कर बुला लेते थे।

वहीं पर शायद वो लड़का भी था जो शिकायत लेकर आया था। वो मुझे बड़ी हैरानी–भरी आँखों से देख रहा था। वो शायद सोच रहा था कि जब वो शिकायत लेकर आया था तो मैंने साफ़ कपड़े पहने थे और मैं एक साहब की तरह बात कर रहा था। मगर आज मुझे गंदे कपड़ों में देख कर वो हैरान हो गया था। मैं भी मन ही मन हँस रहा था। उसकी नज़र में पहले मैं साहब था। और वो मुझे 'सर' कह कर बुला रहा था। मगर अब वो मुझे कैसे बुलाएगा, मैं यही सोच रहा था। और वो भी शायद यही सोच रहा होगा।

तभी मेरे साथियों ने मुझे सीवर में घुसने के लिए कहा। ये सुनकर तो शायद उसकी

हैरानी और बढ़ गई होगी। उसकी सोच अब उससे शायद यही कह रही होगी कि मैं कोई साहब नहीं, बल्कि एक सीवर में घुसकर उसको साफ़ करने वाला एक छोटा सा कर्मचारी हूँ।

जब मैं सीवर में घुसा तो लोग मुझे ऐसे देख रहे थे मानो मैं उनके जैसा इंसान ही नहीं हूँ। न जाने मैं कितना गंदा हूँ। जबकि मैं उन्हीं की गंदगी को साफ़ करता हूँ। न जाने लोग ऐसा क्यों सोचते हैं। और जब मैं उनके सीवर साफ़ करके बाहर निकला तो उन्हीं लोगों के चेहरों की खुशी देखने लायक थी। मगर अब भी कुछ लोग मुझ से घिन कर रहे थे। क्योंकि अब मैं और भी गंदा लग रहा था। गीले कपड़े, और कपड़ों पर गंद लगा हुआ। फिर मैंने एक घर के बाहर हाथ–पैर धोए और हम अपने ऑफ़िस की तरफ़ चल दिए।

मगर मैं यही सोच रहा था कि मैं उनकी गंदगी को साफ़ करता हूँ, फिर भी मुझ से जानवरों जैसा व्यवहार होता है। ऐसा क्यों? क्या मैं उनके जैसा नहीं हूँ? फिर कुछ ही पल के बाद दिल कहता है कि छोड़ो यार, कोई बात नहीं, ऐसा तो चलता है।

फिर हम ऑफ़िस आ गए और वो सोच वहीं, उस गली में छूट गई।

आज़ाद की कहानी

संगीता कुमारी

काफ़ी समय की बात है। तब मेरी उम्र बारह या चौदह साल होगी। उस समय हमारी गली में आज़ाद नाम का आदमी रहता था। उसकी पत्नी बिमला थी। बिमला का पति बहुत ज़्यादा नशा करता था। वो नशे में दिन–भर चूर रहता था। कोई भी नशा ऐसा नहीं था जो आज़ाद नहीं करता था। आज़ाद को नशे के लिए किसी की जान तक लेना मंज़ूर था। आज़ाद और बिमला के दो बच्चे थे। आज़ाद एक दुबला–पतला आदमी था। आज़ाद का क़द पाँच फुट, चार इंच था। उसकी पत्नी बिमला आज़ाद से

कुछ ज़्यादा ही दुबली–पतली थी। बिलकुल तिनके की तरह। उसका क़द था पाँच फुट, दो इंच।

उनके दो बच्चे थे। दोनों ही लड़के थे। बिमला के बड़े लड़के की उम्र चौदह साल थी और दूसरे लड़के की उम्र बारह साल थी। ये दोनों लड़के अपने पापा से बहुत ज़्यादा डरते थे। इसलिए जब भी आज़ाद बिमला को मारता, ये दोनों लड़के डर के मारे अपनी मम्मी को आज़ाद से पिटते हुए देखते थे। ये दोनो लड़के छोटे थे, या फिर अपने पापा से डरते थे। शायद इसलिए वो अपने पापा से कुछ नहीं कहते थे।

उनका घर बिलकुल टूटा–फूटा था। मिट्टी से उनके घर में पुताई होती थी। और खपरेलों की छत बनी हुई थी।

जब भी बिमला आज़ाद को समझाती, आज़ाद का गुस्सा हाई हो जाता था। फिर आज़ाद बिमला को बहुत मारता था। और बिमला को मारते–मारते उसे ख़ून में लथपथ कर देता था। कोई इन लोगों की लड़ाई में शामिल नहीं होना चाहता था। सब लोग बस खड़े होकर उनका तमाशा देखते थे। कोई भी उनके बीच में नहीं बोलता था। क्योंकि उनकी इस तरह की लड़ाई रोज़ होती थी। सब लोग उनकी रोज़ की लड़ाई देखकर काफ़ी बोर हो चुके थे। जब भी आज़ाद बिमला को मारता, बिमला चिल्लाती, घबराती और एक कोने में सिकुड़कर बैठ जाती। अब बिमला करे तो करे क्या? रोज़ की उनकी यही कहानी थी।

आज़ाद नशे में डूब जाने की लत की वजह से घर में एक पैसा नहीं देता था। वो नशे के लिए कुछ भी करने को तैयार था। आज़ाद बिमला के पास एक पैसा तक नहीं छोड़ता था। ऊपर से, वो एक ऐसा आदमी था जो न तो ख़ुद कमाता था और न ही अपनी पत्नी को कमाने देता था। घर का ख़र्चा चले तो चले कैसे? भूखे तो रह नहीं सकते थे।

कभी–कभी ये लोग गली वालों से माँगकर खा लेते थे। लेकिन रोज़–रोज़ कौन दे? और उन्हें ख़ुद भी माँगते हुए शर्म आती थी। भूख से बचने के लिए उसकी पत्नी कोठी में जाती थी और काम करती थी। लेकिन उसके काम से आने के बाद ही गली में

खड़ी करके अपनी पत्नी को बहुत ही बुरी तरह से मारता था। गली–वाले उसे बहुत समझाते, लेकिन वो बहुत गंदा आदमी था, उल्टा गली वालों को भी गाली देने लग जाता था।

गली–वाले भी उसे गाली देते थे। मारते इसलिए नहीं थे क्योंकि उन्हें डर रहता था कि कहीं एक हाथ मारते ही राम नाम सत्य हो जाए। बस इसी डर के कारण कोई उस से कुछ नहीं कहता था। लेकिन रोज़–रोज़ लड़ाई–झगड़े! जब हम बाहर निकल कर लड़ाई देखते थे तो मेरी मम्मी गुस्सा करतीं और कहतीं, "चलो! अंदर जाकर बैठ जाओ"। उसके रोज़ के ड्रामों से तंग आकर सभी गली–वालों ने उसे और उनके सभी घरवालों को यहाँ से भगा दिया। वे अपना मकान बेचकर कहीं और चले गए।

आज़ाद की कहानी, दोबारा

संगीता कुमारी

काफ़ी समय की बात है। तब मेरी उम्र बारह या चौदह साल की होगी। उस समय हमारी गली में एक आज़ाद नाम का आदमी रहता था। उसकी पत्नी बिमला थी, जो बहुत ज़्यादा नशा करती थी। कोई भी नशा ऐसा नहीं है जो वो नहीं करती थी। वो दिन–भर नशे में चूर रहती थी। आज़ाद और बिमला के दो बच्चे थे। आज़ाद एक दुबला–पतला आदमी था। उसका क़द पाँच फुट, दो इंच था।

उसकी पत्नी आज़ाद से कुछ ज़्यादा ही दुबली–पतली थी। बिलकुल तिनके की तरह। उसका क़द था पाँच फुट, चार इंच। उसके दाँत बीच–बीच में टूटे और बिलकुल सड़े हुए थे। वो फटे–पुराने कपड़े पहने हुए रहती। दिखने में उसके दोनों लड़के चार फुट, दो इंच के थे। लेकिन वो अपनी मम्मी से बहुत ज़्यादा डरते थे। और आज़ाद भी अपनी पत्नी से बहुत डरता था।

बिमला नशे में हमेशा चूर रहती थी। उसे अपना नशा पूरा करने के लिए किसी की जान तक लेना मंजूर था। उसका घर बिलकुल टूटा–फूटा था। मिट्टी से उनके घर में पुताई होती थी। और खपरेलों की छत बनी थी।

जब भी आज़ाद बिमला को समझाता, बिमला का गुस्सा हाई हो जाता। और वो तभी आज़ाद के साथ बहुत मार–पीट करती थी। आज़ाद चिल्लाता, घबराता और एक कोने में सिकुड़ कर बैठ जाता था। करे तो क्या करे? रोज़ की उसकी यही कहानी थी। बिमला नशे में डूब जाने के लिए घर में एक पैसा तक नहीं छोड़ती थी। वो पैसे के लिए आज़ाद को बहुत मारती थी।

बिमला एक ऐसी औरत थी जो न तो खुद कमाती थी, और न ही अपने पति को बाहर कमाने के लिए जाने देती थी। अब भूखे तो ये रह नहीं सकते थे। कभी–कभी गली वाले उन्हें खाने को कुछ दे दिया करते थे। लेकिन रोज़–रोज़ कौन दे?

आज़ाद क्या कर सकता था? घर में एक पैसा नहीं। क्या खाएँ ये लोग? उसे अपने दोनों लड़कों पर गुस्सा आता था। और तरस भी बहुत आता था।

भूख से बचने के लिए आज़ाद कुछ कोठी–क्वाटरों में जाकर काम करने लगा। और वहाँ से दो पैसे घर में आने लगे। लेकिन यह सब बिमला को मंजूर नहीं था। वो आज़ाद पर कई तरह के इलज़ाम लगाती, "ये पैसे कहाँ से लाया? किसने ये पैसे तुझे दिए?" और वो कहती, "वहीं जा, जिसने ये पैसे तुझे दिए हैं"।

आज़ाद ये सब सुनकर आग–बबूला हो जाता और दो–तीन बात वापस सुना देता। कहता, "तेरे जैसे घर में बैठकर नशे में नहीं उड़ा रहा। ये पैसे कमाई के हैं। पैसे कमाए, तो पता चले। तुझे घर में बैठकर बकवास करनी आती है, और कुछ नहीं"। ये सुन कर बिमला का पारा भी सातवें आसमान तक पहुँच जाता। फिर क्या था? बिमला एक ईंट उठाकर आज़ाद के पीछे भागने लगती और आज़ाद और बिमला पार्क के इस तरह चक्कर काटने लगते जैसे वे अपनी शादी की सालगिरह पर दोबारा फेरे ले रहे हों। इस तमाशे को देखने के लिए लोगों की भीड़ इकट्ठा हो जाती थी, जैसे कोई बिना पैसे का शो देखने को मिल रहा हो। कुछ लोग इन दोनों की लड़ाई देख कर अफ़सोस

करते, तो कोई हँस–हँस कर बिलकुल लोट–पोट हो जाते। एक–दो बार बिमला ने अपने पति का सिर फोड़ भी दिया था। उसे कई बार पुलिस भी पकड़कर ले गई थी। लेकिन वो अपनी हरकतों से बाज नहीं आती थी। वो अपने घरवालों को तो गाली देती ही थी, लेकिन इस महान काम के लिए वो गली वालों को भी नहीं छोड़ती थी।

गली वाले भी उसे उल्टा गाली देते थे। लेकिन मारते इसलिए नहीं थे कि एक तो औरत, ऊपर से तिनके की तरह। अगर एक हाथ लग जाए तो उसका राम नाम सत्य हो जाए। लेकिन रोज़–रोज़ के इस तरह के ड्रामों से तंग आकर गली वालों ने उन्हें यहाँ से निकाल दिया। अब वे लोग कहीं और रहते हैं।

लैला, ओ लैला!

राकेश कुमार

जब मैं लैला के बारे में सोचता हूँ तो मेरा मन मचल उठता है। मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ। उसके बिना लगता है मेरी ज़िन्दगी अधूरी है। उसके बिना मेरा दिल बेचैन रहता है। आज भी जब उसकी याद आता है तो मैं खुद ही मुस्कुराने लगता हूँ। पता नहीं वो मुझे याद करती होगी या नहीं, पर मैं उसे याद करता रहता हूँ। उसका चेहरा जब याद आता है तो मैं अपने आप को भूल जाता हूँ। उसकी वो प्यारी आँखें, जो शायद आज भी मेरा इंतज़ार करती होंगीं।

मेरी लैला! नादान–सी, काली–सी। जब वो कुछ बोलती, तो मैं समझ नहीं पाता, मगर महसूस करता। जब वो खड़े होकर दोनों हाथ ऊपर उठाती, तो मुझे उस पर बहुत प्यार आता।

आज भी याद है मुझे वो दिन जब मैं लैला को जंगल में घुमाने ले गया था। मैं उससे बहुत प्यार करता था, इसलिए मुझे उस पर पूरा विश्वास था। वो भी मुझ पर थोड़ा विश्वास करती थी। (कम इसलिए कि मैं कभी–कभी गुस्से से उसे डाँट दिया करता

था। तो वो मुझ से थोड़ा नाराज़ रहती थी। मगर मेरे मनाने पर जल्दी ही मान जाती थी और पहले की तरह मेरे साथ घूमती–फिरती)। जब वो मेरे साथ रहती थी, तो किसी से नहीं डरती थी। अकेले में वो घबरा जाती थी।

उस दिन मैं उसे जंगल घुमाने ले गया। हम दोनों वहाँ हरे–भरे पेड़–पौधों में घूमने लगे। वहाँ एक नीम का पेड़ था। सुबह–सुबह मैं नीम के पत्ते खाता था, क्योंकि इस से ख़ून साफ़ रहता है। जब मैं और लैला एक नीम के पेड़ के पास आए तो मैंने लैला से कहा, "लैला, तू यहाँ खड़ी रहना, मैं कुछ नीम के पत्ते तोड़ कर लाता हूँ"। उसने सिर हिला कर हाँ कर दी। मैं उसे वहाँ अकेला छोड़ कर नीम के पेड़ पर चढ़ गया। कुछ देर बाद मैं जब नीचे उतरा तो देखा कि लैला वहाँ नहीं थी। मुझे चिन्ता होने लगी। मैं डर गया कि न जाने लैला कहाँ चली गई। वो तो यहाँ बिलकुल अनजान है। न जाने इस जंगल में वो कहाँ भटक रही होगी।

मेरा दिल बेचैन हो गया। उसे कहाँ ढूँढूँ? मैं पागलों की तरह उसे इधर–उधर आवाज़ देने लगा। मैं ज़ोर से चिल्लाया, "लैला, ओ लैला..!" इतने में क्या देखता हूँ, वो मेरी तरफ़ दौड़ी चली आ रही है। उसे पता था कि मेरी आवाज़ मेरे प्यार की कशिश बनकर उसे मेरे पास खींच लाई है। वो आते ही मुझ से लिपट गई और मैंने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा, उसका चेहरा चूमने लगा और उससे कहने लगा, "आज तो तू ने मुझे डरा ही दिया। बिना पूछे तू कहाँ गई थी? बोल, तूझे कुछ हो जाता तो मेरा क्या होता?" लेकिन वो मुझे प्यार भरी आँखों से देखे जा रही थी। मेरे कहने का उस पर कोई असर नहीं हो रहा था।

मगर शायद वो मुझे समझने की कोशिश कर रही थी। फिर मैं उसे अपने साथ घर ले गया। हम साथ रहते थे। एक ही कमरे में हमारा उठना–बैठना रहता था। लेकिन रात को हम अलग–अलग सोते थे, मैं पलंग पर सोता था और वो नीचे सोती थी। मगर कभी–कभी रात को वो मुझे तंग करती थी। न जाने कब रात को वो मेरे साथ मेरे बिस्तर पर आ कर सो जाती थी। जब मैं सुबह उठता तो उसे अपने पास सोता देख मुझे गुस्सा आता था, पर उसका मासूम–सा चेहरा देखकर मेरा गुस्सा शान्त हो जाता था।

हम ने कई दिन, कई रातें साथ–साथ गुज़ारी हैं। लेकिन उसकी एक आदत बहुत बुरी थी – जब मैं उसे डाँटता, तो वो गुस्से में मेरे कपड़े या घर वालों के कपड़े फाड़ दिया करती थी। कभी चादर फाड़ती, तो कभी हमारे जूते काट दिया करती थी।

सुन्दर–सी उसकी आँखें, वो प्यारे–प्यारे होंठ, बड़े–बड़े कान, कोमल से उसके हाथ। कितना लचीला था उसका बदन, वो छोटी–सी प्यारी नाक। उसके गले में जो सुन्दर चेन थी, उस में घुँघरू थे। जब वो चलती थी तो घुँघरू बजते थे। जब मैं उस से बोलता था तो वो मुझ से कुछ नहीं बोलती, बस मुझे देखती रहती थी। मैं ही बोलता चला जाता था। वो उछल–उछल कर मुझे अपनी ख़ुशी के बारे में बताती थी। कभी–कभी उसके बड़े–बड़े नाख़ून मुझे चुभ जाया करते थे, मगर मुझे दर्द नहीं होता था क्योंकि वो नाख़ून प्यार से लगते थे।

मुझे एक बात का दुःख रहता था, कि काश ये मेरी तरह बोल सकती तो कितना अच्छा होता। हम दोनों एक–दूसरे का हाल सुनकर अपने दिल को तसल्ली देते। आज तक मैं उसे कभी भूल नहीं पाया, न ही भूल सकता हूँ। वो मेरे जीवन का एक हिस्सा है, भले ही वो एक कुतिया क्यों न हो। उसके साथ बिताए पल मेरे लिए ख़ूबसूरत पल हैं।

हेडलाइंज़

यशोदा

डियर ऑल,
मैंने कुछ हेडलाइंज़ न्यूज़पेपर में से काटी हैं। कुछ लाइंज़ को लेकर लोगों से बात की, और कुछ लाइंज़ पर मैंने ख़ुद से भाषणबाज़ी की है, जो इस तरह से है –

1. थोड़ी देर की आसानी या हमेशा की परेशानी?
मैंने इस लाइन को लेकर कई लोगों से बात की, जिसमें ख़ास करके मर्द थे। उनके

सामने इस लाइन को बोलते ही उनकी आँखों के सामने उनकी बीवियाँ नाचने लगतीं। सबसे बड़ी परेशानी वो अपनी बीवियों को बताते हैं, और कहते हैं, "भैया! शादी तो चार दिन की चाँदनी है, फिर अंधेरी रात है। ये वो ज़हरीला लड्डू है, जो खाये पछताए, जो न खाए वो ललचाए"। ख़ैर, ऐसा तो ये लोग सोचते हैं। लेकिन इस बारे में आपकी क्या राय है?

2. कौड़ी के भाव खुशबू की छड़ी!

इस लाइन से मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे मैं बस की धक्का–मुक्की में फंसी हुई हूँ। जिसमें एक–दूसरे से टकराते जिस्मों के साथ–साथ एक–दूसरे के स्मैल भी टकरा रहे हैं। कभी–कभी तो पर्फ़्यूम की स्मैल आ जाती है, नहीं तो एक–दूसरे की स्मैल को झेलते–झेलते ही सफ़र कट जाता है।

3. सावधान! सच्चे प्यार की उम्र छोटी होती है।

इस लाइन को लेकर मैंने एक लड़की से बात की, जिसका नाम है चन्दा (नाम बदला है)। चन्दा दिखने में एक आम शक्लो–सूरत की लड़की है। उसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो ख़ास हो। उस ने मुझे बताया कि उसकी इसी ख़ूबी की वजह से एक लड़का उस से बहुत प्यार करता है। मैंने उस से पूछा कि उस लड़के को तुम्हारी इस ख़ूबी में क्या ख़ूबी नज़र आती है? तब उसने बताया, "वो कहता है कि अगर तुम में कुछ ख़ास बात होती तो शायद तुम मेरे पास न होतीं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरी शक्लो–सूरत क्या है"।

तब मैंने उसे अपनी लाइन सुनाई। तो वो झट से सिर हिलाती हुई बोली, "यह बात बिलकुल ठीक है"। मैं उसकी तरफ़ देखते हुए बोली, "तुम्हें ये बात कैसे ठीक लगी?" वो मुस्कुराते हुए बोली, "सुनील (नाम बदला है) नहीं चाहते कि मेरी बदनामी हो, और मैं भी नहीं चाहती कि इस बात से मेरे घरवालों को कोई भी ठेस पहुँचे। इसलिए हम लोग कभी अपने–अपने घर में किसी को नहीं बताएँगे और अपने घरवालों की मर्ज़ी से ही शादी करेंगे"। मुझे उसकी यह बात सुनकर कोई हैरानी नहीं हुई, क्योंकि ज़्यादातर ऐसा ही होता है। लेकिन फिर भी मैंने उस से कहा, "तो फिर तुम्हारे इस प्यार का क्या मतलब?" वो बोली, "ज़रूरी नहीं जिस प्यार में मिलन हो जाए, वही प्यार है। हमारे प्यार को अगर तुम दूर से देखोगी तो तुम्हें हमारे प्यार की उम्र छोटी

ही नज़र आएगी, लेकिन हमारे दिलों में देखोगी तो हमारे प्यार की उम्र की कोई सीमा नहीं है..."

4. रैलियों का रेला – मेला या झमेला?

इस लाइन से मेरी आँखों के सामने रामलीला मैदान के झमेले याद आ रहे हैं। रामलीला मैदान में जब भी रैली होती है, तो सड़कों पर ट्रैफ़िक जाम हो जाता है और सड़कों पर उस रैली के प्रचार के पर्चे उड़े–उड़े फिरते हैं। माइक में फटी हुई आवाज़ गूँजती है और ट्रैफ़िक जाम होने की वजह से गाड़ियों की बेसुरी आवाज़ चारों तरफ़ फैली होती है। मैदान में लगे हुए मेले का पता ही नहीं चलता, कि वहाँ लोग भाषण सुन रहे हैं, या पूरी खा रहे हैं। सो रहे हैं, या वो यहाँ आ कर पछता रहे हैं...

विस्फोटों के गुब्बार में छिपा सच पाएँगे आप यशोदा की ख़बरों में!

लेकिन अभी नहीं, कुछ समय बाद फिर हाज़िर होगी यशोदा जनता और अपनी नई उलझाने वाली, या उलझने वाली, समझाने वाली, या ना समझ आने वाली खबरों के साथ...

टिंग टौंग...
सी यू लेटर